प्रथम अनुसंधान रिपोर्ट

First Research Report

विषय का नाम : हिरनी - बिरनी

Subject Title: Hirni - Birni

फाइल संख्या/File No.:-

28-6/ICH-scheme/13/2014-15/11164

Submitted By :-

BULLOO KUMAR

S/O- RAJENDRA SINGH

VILL.- GONDAR BIGHA,

P.O.- DARIYAPUR, P.S.- HISUA

DIST.:- NAWADA, PIN - 805129

BIHAR

Mobile:- +91 9955886555

परियोजना परिचय

हिरनी बिरनी बिहार राज्य के मगध क्षेत्र की अत्यंत प्रचलित लोक गाता रही है जो की वर्तमान परिवेश मे लुप्त हो चुकी एक कला के रूप में यत्र तत्र मौजूद है।मगध के इतिहास में इसकी एक गौरवशाली अतीत मौजूद रही है । मगध क्षेत्र के निम्न जाति एवं मजदूर वर्ग मुख्यतः मुसहर ,दुसाध ,राजवंशी ,चमार ,राजवार ,भुईया,नट आदि समुदाय की लोकगाथा है हिरनी बिरनी । इसका विस्तार बिहार में मगध से लेकर भोजपुर क्षेत्र तक मिलता है । विभिन्न भाषाई क्षेत्रों में इसका प्रदर्शन अलग अलग नामों से जैसे झूमर पारना तो कहीं ख्याल के नाम से किया जाता है ।

बिहार मे कुश्ती और कसरतकश की अत्यंत प्राचीन परंपरा है जो की यहाँ के जनमानस में बहुत गहराई से घुसा है ,इसको लेकर यहाँ विभिन्न सांस्कृतिक प्रदर्शन भी किए जाते हैं । हिरनी बिरनी के प्रदर्शनों में भी पोषण सिंह के द्वारा कुश्ती की परंपरा को उकेरा गया है । इस कहानी के साथ साथ कई छोटे छोटे प्रहसन भी किए जाते हैं । इन्हें भी दर्शक हिरनी बिरनी के अंतर्गत ही होने वाले प्रदर्शन के रूप में जानते हैं । इसमे एक ओर जहां दर्शक नट के चौकड़ी भरने के दृश्य ,पोषण सिंह द्वारा भैंसा नाथने के दृश्य को अत्यंत उत्साह के साथ देखते हैं वहीं कुछ दृश्यों में दर्शकों की उदासीनता भी देखने को मिलती है । ऐसी उदासीनता को रोमांचक बनाने के लिए हिरनी बिरनी के कलाकार जो की समाज के दलित एवं शोषित वर्ग से आते हैं ,वे अपनी कहानी को व्यंगात्मक रूप से समाज के सामने प्रदर्शित करते हैं ।

हिरनी बिरनी के कलाकारों का मुख्य पेशा फसल बुआई से कटाई एवं खलिहान तक एवं गिट्टी और पत्थर तोड़ने से लेकर ईंट भट्ठों पर तपने आदि तक है । इनके सारे कार्यों में हिरनी बिरनी की गाथा गायन की परंपरा समय गुजारने एवं मनोरंजन का साधन होता है ।

अनुसंधान से प्राप्त तथ्य एवं आंकड़े

विगत तीन महीनों का अनुसंधान का मुख्य विषय जिस पर मैंने कार्य किया वह यह था कि मगध अंचल मे हिरनी बिरनी कि वर्तमान स्थिति । इस दौरान मैंने तथ्य एवं आंकड़े इकट्ठा करने कि कोशिश की ,जिसमे इस क्षेत्र मे जिलवार ग्रामवार उन ग्रामीणों की स्थिति जो हिरनी बिरनी के जानकार हैं एवं जीवित हैं एवं वे लोग जो इस लुप्त होती परंपरा को बचाना चाहते हैं पर अत्यंत गरीब व सहायता के पात्र हैं । इस अनुसंधान मे उनका वर्तमान पेशा ,उम्र आदि शामिल है।

आंकड़े अग्रलिखित हैं (सचित्र) :------

क्र.सं.	नाम	उम्र	वर्तमान पेशा	परंपरागत विधा
01	पुनीत मांझी	55	मजदूरी	गायक
02	दीनानाथ राजवंशी	36	मजदूरी	गायक
03	सौदागर मांझी	45	मजदूरी	मानर वादक
04	संजय मांझी	35	मजदूरी	गायक
05	पिंट्टु कुमार	24	मजदूरी	अभिनेता
07	नरेश मांझी	22	मंजदूरी	अभिनेता
08	उपेंद्र मांझी	25	मजदूरी	अभिनेता/वादक
09	ब्रह्मदेव मांझी	26	मजदूरी	गायक
10	संजय मांझी	22	मजदूरी	अभिनेता/गायक
11	सियाराम मांझी	24	मजदूरी	अभिनेता
12	अखिलेश राजवंशी	19	मजदूरी	अभिनेता
13	धुजन मांझी /मुसाफिर मांझी	51	मजदूरी	अभिनेता/गायक
14	वसुदेव मांझी	39	मजदूरी	अभिनेता/वादक
15	बंशी मांझी	70	मजदूरी	अभिनेता/गायक
16	हलचल मांझी	60	मजदूरी	अभिनेता/वादक
17	जालो मांझी	42	मजदूरी (गत मई माह में कैंसर से मृत्यु)	अभिनेता/गायक
18	अमृत मांझी	55	मजदूरी	गायक
19	मोती मांझी	65	मजदूरी	अभिनेता/गायक
20	मिथुन मांझी	20	मजदूरी	नर्तक/अभिनेता
21	शरन मांझी	38	मजदूरी	अभिनेता/गायक
22	रूपलाल मांझी	36	मजदूरी	गायक
23	श्रीलाल राजवंशी	31	मजदूरी	अभिनेता
24	महेंद्र राजवंशी	34	मजदूरी	गायक/अभिनेता
25	वासुदेव मांझी	50	मजदूरी	गायक/अभिनेता
26	कारु मांझी	65	मजदूरी	वादक/गायक

क्र.सं.	नाम	उम्र	वर्तमान पेशा	परंपरागत विधा
27	चंदर मांझी	62	मजदूरी	गायक
28	जवाहिर मांझी	38	मजदूरी	वादक/गायक
29	सुंदर मांझी	22	मजदूरी	वादक
30	मुनक मांझी	28	मजदूरी	गायक/अभिनेता

कलाकारों के अन्य संचित चित्र :-

Valeant

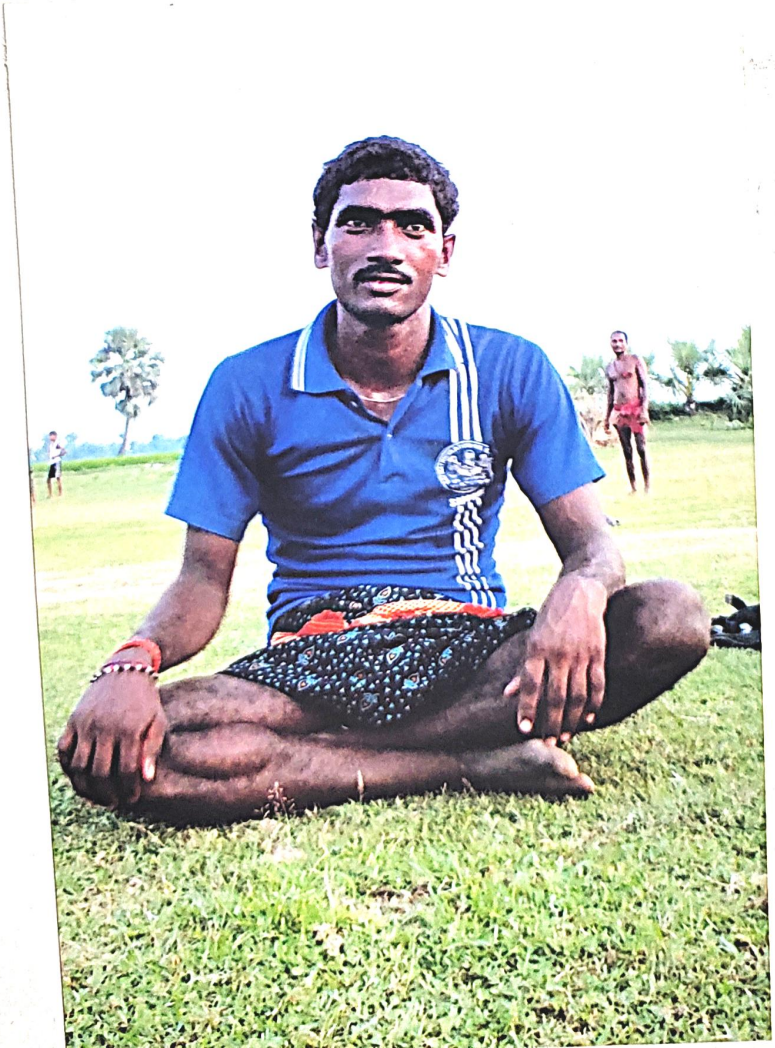

वर्तमान स्थिति एवं कारण

वर्तमान समय में यह शैली लगभग मृतप्राय अवस्था में देखी जा रही है । मैंने अपने पिछले तीन माह के अनुसंधान के दौरान बिहार के गया ,नवादा ,नालंदा ,शेखपुरा आदि क्षेत्रों के विभिन्न गावों जहां पर इस समुदाय के लोग बहुतायत रूप से निवास करते हैं ,उनके बीच जा कर हिरनी बिरनी लोक गाथा पर चर्चा किया । इस चर्चा के दौरान में यह देख रहा हूँ कि इस समुदाय कि नई युवा पीढ़ी इस गाथा से बिल्कुल ही अनभिज्ञ है ।

हिरनी बिरनी के लुप्त होती अवस्था के कई कारण सामने आ रहे हैं ।अवस्था के कई कारण सामने आ रहे हैं । अनुसंधान से मैं इस बिन्दु तक पहुँच पाया हूँ कि निम्न जाति के इस समुदाय का आर्थिक पलायन एक बड़ी वजह है । इस समुदाय का अपने पारंपरिक कार्य जैसे फसल बुआई ,कटाई आदि को छोडकर शहर के ईंट भट्ठों पर पलायन करने कि वजह से उनके पास समय नहीं होने कि वजह से मनोरंजन के रूप मे हिरनी बिरनी कि जगह अन्य यांत्रिक एवं तकनीकी साधनो नें अपनी जगह बना ली है । इसके अलावे इस समुदाय के लोगों मे बुजुर्ग पीढ़ी का असामयिक मृत्यु भी एक कारण है ,जिसकी वजह से पुरानी एवं नई पीढ़ी के बीच सांस्कृतिक आदान प्रदान की स्थिति नहीं पाने की वजह से इस लोक गाथा का प्रवाह अवरुद्ध हो गया है ।

विगत तीन माह के अनुसंधान से यह पता चलता है कि लगभग सभी गावों में अगर देखा जाये तो इक्के दुक्के लोग ही बचे हैं जो इस लोक परंपरा का ज्ञान रखते हैं ।

आगामी तीन माह की योजना

आगामी त्रैमासिक योजना के अंतर्गत विगत अनुसंधान में चिन्हित गावों के कलाकारों एवं विशेषज्ञों हिरनी बिरनी के उद्भव ,विकास ,पतन एवं प्रदर्शन विषय पर रिपोर्ट तैयार करना है । इसके अंतर्गत गया ,नवादा ,शेखपुरा ,नालंदा आदि के लोक कलाकार हिरनी -बिरनी के प्रमुख कलाकार श्री करंट लाल जी एवं अन्य विद्वानों के साथ इस विषय पर चर्चा कर उसे संग्रहीत करना मुख्य योजना होगी |